इकाई . 4 : विसर्ग सन्धि सम्पूर्ण व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

इकाई की रूप रेखा

4.1 प्रस्तावना

व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित यह चौथी इकाई है। इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि विसर्ग सन्धि कहाँ पर होती है। विसर्ग का चिन्ह क्या है? इन सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है। विसर्ग सन्धि के लिए कुछ सूत्र निश्चित किये गये है, जो इस इकाई में है।

अभी तक आपने संज्ञाप्रकरण प्रकरण अच् सन्धि हल् सन्धि प्रकरणों को आपने ज्ञान कर लिया। अब आइये विसर्ग सन्धि का ज्ञान प्रारंभ करते है। सामान्यतया विसर्ग वह है जो अक्षरों के बाद दो बिन्दू के रूप में (:) लगता है। उसे विसर्ग कहते हैं। विसर्ग की उत्पत्ति र् से होती है। विसर्ग बनने वाला रेफ प्रायः स् से बनता है। इस प्रकार से स् से र् बनता है और र् से विसर्ग (:) बनता है। अब हमें अध्ययन करना है कि किस स्थिति में स् से र् 'र्' से विसर्ग (:) बनता है ? इस के विषय में सम्यग् रूप से सूत्रों के माध्यम से अध्ययन करेंगे।

पंच सन्धि के अन्तर्गत विसर्ग सन्धि भी आता है जिसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। विसर्ग सन्धि के माध्यम से हम शब्दों के अर्थो का ज्ञान करते है। इस इकाई के माध्यम से विसर्ग सन्धि के ज्ञान को समझते हुए, उसकी महत्ता को भी बता सकेगा।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सन्धियों के विषय में अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणापद सन्धियों का अध्ययन करेंगे :–

- विसर्ग के स्थान पर सकारादेश होता है, इसके विषय में आप समझ सकेंगे।
- पदान्त सकार के स्थान रू होता है, इसके विषय में आप समझ सकेंगे।
- रू सम्बंधि र के स्थान में उत्व होता है इसके विषय में आप समझ सकेंगे।
- रू सम्बन्धि र का लोप होता है इसके विषय में आप समझ सकेंगे।
- रेफ का लोप होने के बाद पूर्व अण् को दीर्घ होता है, इसके विषय में आप समझ सकेंगे।
- एतद् तथा तद् के सु का लोप होता है, इसके विषय में आप समझ सकेगें।

4.3 विसर्ग सन्धि सम्पूर्ण व्याख्या एवं प्रक्रिया अंश

सकारादेश विधायक विधि सूत्र

103. विसर्जनीयस्य सः 8 । 3 । 34।। खरि विसर्जनीयस्य सः स्यात् । विष्णुस्त्राता ।

अर्थ :– खर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है।

यह सूत्र हल् सन्धि में भी पढ़ा गया है और यहाँ भी पढ़ा गया है। यद्यपि यह सूत्र विसर्ग को सकार करता है अतः इस सूत्र को यही पढ़ा जाना ठीक था, फिर भी प्रसंग वश वहाँ भी पढ़ा गया।

खर् प्रत्याहार में ख्, फ्, छ, ठ, थ, च, ट्, त्, क, प, श, ष, स, ये तेरह वर्ण आते है। इन वर्णो के परे होने पर विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हो होता है। इनमें भी क और ख के परे होने पर वैकल्पिक जिह्वामूलीय तथा प और फ के परे होने पर वैकल्पिक उपध्मानीय होता है। च और छ के परे होने पर इनके द्वारा किये गये सकार को स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से स् के स्थान पर श्चुत्व शकार आदेश हो जाता है। तथा ट् और ठ के परे होने पर ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व हो जाता है त् और थ के परे होने पर सकार ही रहता है।
विष्णु + त्राता यहां पर सूत्र लगा– विसर्जनीयस्य सः यह सूत्र कहता है कि खर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग के स्थान में सकार आदेश होता है यहां पर खर् प्रत्याहार का वर्ण पर में है त्राता के तकार और विसर्ग पूर्व में है विष्णुः में (:) विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होकर विष्णुस् + त्राता बना। वर्ण सम्मेलन करने के बाद विष्णुस्त्राता रूप सिद्ध होता है।

इस सूत्र के कुछ सामान्य उदाहरण :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
रामः + त्रायते	रामस् + त्रायते	रामस्त्रायते
विष्णुः + त्राता	विष्णुस् + त्राता	विष्णुस्त्राता
गौः + चरति	गौस् + चरति	गौश्चरति
निः + छलः	निस् + छलः	निश्छलः

वैकल्पिक सकारादेश विधायक विधि सूत्र

104 वा शरि 8 । 3 । 36 ।।शरि विसर्गस्य विसर्गो वा। हरिः शेते, हरिश्शेते

<u>**अर्थ**</u> :– शर् प्रत्याहार के परे होने पर विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग आदेश होता है। शर् प्रत्याहार में श, ष, स ये तीन वर्ण आते है। और शर् प्रत्याहार खर् प्रत्याहार के अन्तर्गत आता है। अतः विसर्जनीयस्य सः के नित्य प्राप्त होने पर यह सूत्र उसका अपवाद (बाधक) सूत्र है। इस सूत्र का आरम्भ किया जाता है। तात्पर्य यह हुआ कि खर् प्रत्याहार में से श, ष, स के परे होने पर एक पक्ष में विसर्ग तथा एक पक्ष में सकार तथा शेष खर् के परे होने पर नित्य से विसर्ग के स्थान पर सकार ही होता है।

हरिः + शेते यहां पर सूत्र लगा – विसर्जनीयस्य सः सूत्र से नित्य विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश प्राप्त था। उसको बांधकर सूत्र लगा– <u>वाशरि</u> । यह सूत्र कहता है कि शर् प्रत्याहार का वर्ण परे होने पर विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग आदेश करता है। यहां पर पर मे शर् प्रत्याहार का वर्ण है शेते का शकार उससे पूर्व में विसर्ग है हरिः में विसर्ग (:) है। इसलिए विसर्ग के स्थान में सकार आदेश विकल्प से होता है हरिस् + शेते बना। अब यहां शकार तथा सकार की योग होने पर स्तोः श्चुना श्चुः सूत्र से सकार के स्थान पर शकार आदेश होकर हरिश् + शेते बना। वर्ण सम्मेलन होकर हरिश्शेते प्रयोग सिद्ध होता है। जब विसर्ग के स्थान में सकार नहीं होगा, उस पक्ष में हरिः शेते प्रयोग सिद्ध होता है। इस प्रकार हरिश्शेते, हरि शेते दो रूप बना।

रूत्वविधायक विधि सूत्र

105 ससजुषोरूः 8 । 2 । 66 ।।

पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रूः स्यात् ।

<u>अर्थ</u> :– पदान्त सकार तथा सजुष् शब्द के षकार के स्थान पर रू आदेश होता है।

यह सूत्र विसर्ग की उत्पत्ति में कारण है। पदान्त सकार को जब यह रू आदेश कर देता है तो इकार की इत्संज्ञा होकर र् शेष बचता है। इस रेफ के स्थान में अवसान में तथा खर् प्रत्याहार परे खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्ग आदेश हो जाता है। तदनन्तर विसर्ग के स्थान पर यथा योग्य जिह्वमूनीय आदि आदेश होते है।
यदि खर् प्रत्याहार से भिन्न अक्षर र् से परे हो तो रेफ के स्थान पर क्या–क्या आदेश होते है? इसे बतलाने के लिए यह प्रकरण प्रारंभ किया जा रहा है।
रू में उकार अनुनासिक होने से उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र के द्वारा उकार की इत्संज्ञा होती है। उसकी इत्संज्ञा करने का फल आगे कहा जायेगा।

शिवस् + अर्च्य : यहां सुवन्त होने से शिवस् पद है। अतः इस सूत्र से पदान्त सकार को रू पुनः रू के उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर शिवर् + अर्च्यः बना। इसके बाद अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है।

उत्वविधायक विधि सूत्र

106 अतो रोरप्लुतादप्लुते 6 । 1 । 113 ।।अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति। शिवोऽर्च्यः ।

<u>अर्थ</u> :– प्लुतभिन्न ह्रस्वं अकार से परे रु सम्बंधी रेफ को उकार आदेश होता है। प्लुत भिन्न ह्रस्वं अकार के परे रहते। इस सूत्र का कार्य यह है कि रु में से शेष वचे रेफ के स्थान पर 'उ' आदेश करना है। किन्तु उस रेफ से पहले भी अप्लुत ह्रस्व अकार हो और बाद में अप्लुत ह्रस्व अकार हो तो। दोनों तरफ अप्लुत ह्रस्वं अकार और बीच में रू का रेफ हो तो उसके स्थान पर उकार अर्थात् उ हो जायेगा।

शिवर् + अर्च्य : यहां पर सूत्र लगा – अतोरोरप्लुतादप्लुते। यह सूत्र कहता है कि प्लुत भिन्न ह्रस्वं अकार से परे रू के र को उत्व अर्थात् उ हो जाता है। उसे प्लुत भिन्न ह्रस्वं अकार पर में हो तो । यहां पर प्लुत भिन्न ह्रस्वं अकार है शिव में वकार में अकार। उस अकार से पर में रू सम्बन्धी र विद्यमान है तथा रू सम्बन्धी र के बाद अप्लुत अकार है अर्च्य का अकार। इसलिए रू सम्बन्धी र् के स्थान में उकार अर्थात् उ होकर शिव + उ + अर्च्यः बना। उसके बाद पुनः शिव में अकार तथा पर में उकार इन दोनों वर्णो के स्थान पर आद्गुण से गुण ओ होकर शिवो + अर्च्यः बना। अब यहाँ पर एचोऽयवायावः सूत्र से अवादेश प्राप्त था, उसको बांधकर एङः पदान्तादति सूत्र से पूर्वरूप हुआ तो ओकार तथा अकार दोनों मिलकर पूर्वरूप ओकार ही होगा, शिवो + र्च्यः बना। अकार के स्थान पर संकेताक्षर ऽ (खण्डाकार) चिन्ह यह अकार के बैठ जाने से शिवोऽर्च्यः ऐसा प्रयोग सिद्ध होता है।
ध्यान रहे कि यहाँ पर रू के स्थान पर उ नहीं होगा। किन्तु उकार की इत्संज्ञा तथा लोप हो जाने पर शेष बचे र के स्थान पर ही उत् होगा अर्थात् उकार होगा। सूत्र में रू के कथन का तात्पर्य यह है कि रु कर के ही उत्व हो अन्य र को उत्व नहीं होगा। यथा प्रातर + अत्र = पातरत्र, धातर् + अत्र = धातरत्र इत्यादि प्रयोगों में रू सम्बम्धी र न होने से उत्व नहीं होगा अर्थात् उकार नहीं होगा। नहीं तो अनिष्ट प्रयोग बनने लगता।

अब यहाँ विशेष ध्यान यह देना है कि प्लुत अप्लुत क्या है ? इसका संज्ञा प्रकरण ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः सूत्र में विशेष वर्णन किया है। प्लुत = त्रिमात्रिक होता है उससे रहित अप्लुत अर्थात् एकमात्रिक ह्रस्वं उकार से परे रू सम्बंधी र के स्थान में उ होता है ऐसा सूत्र में कहा गया है। अब विसर्ग सन्धि में इस सूत्र का अन्य उदाहरण यथा –

विग्रह	आदेश	सन्धि
शिवास् + अर्च्यः	शिव + उ + अर्च्य	शिवोऽर्च्यः
बालस् + अत्र	बाल + उ + अत्र	बालोऽत्र
सस् + अपि	स + उ + अपि	सोऽपि
वचनस् + अनुनासिकः	वचन + उ + अनुनासिकः	वचनोऽनुनासिकः
रामस् + अस्ति	राम् + उ + अस्ति	रामोऽस्ति
ततस् + अन्यथा	तत + उ + अन्यथा	ततोऽन्यथा
शान्तस् + अनलः	शान्त + उ + अनलः	शान्तौऽनलः
म् + अनुस्वारः	मनः + उ + अनुस्वारः	मोऽनुस्वारः
शुद्धस् + अहम्	शुद्ध + उ + अहम्	शुद्धोऽहम्
मनषस् + अद्य	मनष + उ + अद्य	मनषोऽद्य
हस्तस् + अस्य	हस्त + उ + अस्य	हस्तोऽस्य
सस् + उपवादः	स + उ + अपवादः	सोऽपवादः
समाचारस् + अन्तिमः	समाचार + उ + अन्तिमः	समाचारोऽन्मिः
ग्रामस् + अस्य	ग्राम + उ + अस्य	ग्रामोऽस्य
न्यूनस् + अस्ति	न्यून + उ + अस्ति	न्यूनोऽस्ति
ग्रामस् + अस्ति	ग्राम + उ + अस्ति	ग्रामोऽस्ति
सुवुधस् + असि	सुवुध + उ + असि	सुवुधोऽसि
श्यामस् + अस्ति	श्याम + उ + अस्ति	श्यामोऽस्ति
कृष्णस् + अस्य	कृष्ण् + उ + अस्य	कृष्णोऽस्य
राज्ञस् + अभिषेकः	राज्ञ + उ + अभिषेकः	राज्ञोऽभिषेकः
उमेशस् + अहम्	उमेश + उ + अहम्	उमेशोऽहम
सुरेशस् + अहम्	सुरेश + उ + अहम्	सुरेशोऽहम्
अवधेशस् + अहम्	अवधेश + उ + अहम्	अवधेशोऽहम्

अभि तक आपने अप्लुत अकार पर में रहे तो रू सम्बन्धी र को उ किया। अब इसके बाद आप हश् प्रत्याहार पर में हो वहां भी रू सम्बन्धी र् के स्थान में उकार होगा। इसके लिए अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है।

उत्व विधायक विधि सूत्र

107. हशि च 6 । 1 । 114 ।। तथा। शिवो वन्द्यः ।।

अर्थ :– अप्लुत अर्थात् ह्रस्वं अकार से परे रू सम्बन्धी र के स्थान पर उ होता है। पर में हश् प्रत्याहार का वर्ण पर में हो तो।

इस सूत्र का काम भी उ करना है किन्तु अतोरोरप्लुतादप्लुते ये सूत्र ह्रस्वं अकार पर में हो तो लगता है और हशि च ह्रस्वं अकार पर में हो तो लगता है। इन दोनों सूत्रों में अन्तर इतना ही है। बॉकी सब में समानता है। अतः ये दोनों सूत्र समानान्तर ही है।

शिवस् + वन्द्यः यहां सबसे पहले सूत्र लगा ससजुषोरूः इस सूत्र के द्वारा पदान्त सकार को रूत्व अर्थात् रू होकर शिव + रू + वन्द्यः बना। उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र

से रू में उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर र् मात्र बचता है। शिव + र् + वन्द्यः बना। अब इसके बाद सूत्र लगा–हशि च। यह सूत्र कहता है कि अप्लुत अर्थात् ह्रस्वं अकार से परे जो रू सम्बन्धी र् उसको उकार होता है हश् प्रत्याहार (ह, य, व, र, ल, भ, म, ङ्, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द) का वर्ण पढ में हो तो। यहां पर अप्लुत अर्थात् ह्रस्वं अकार है शिव में व में अकार उसके पर में रू सम्बन्धी र् के स्थान में उ होता है। उस रू के बाद में हश् प्रत्याहार का वर्ण है वन्द्यः का वकार। इसलिए र् के स्थान में उकार होकर शिव + उ + वन्द्यः बना। उसके बाद शिव में व में अकार तथा पर में उकार का उ इन दोनों वर्णो के स्थान में आद्गुण से गुण ओकार होकर शिव् + ओ + वन्द्यः बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर शिवो वन्द्यः प्रयोग सिद्ध होता है। इस सूत्र के अन्य उदाहरण :–

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
रामस् + हसति	राम् + ओ + हसति	रामोहसति
बालस् + याति	बाल् + ओ + याति	बालोयाति
शिवस् + वन्द्यः	शिव + ओ + वन्द्यः	शिवोवन्द्यः
बालस् + रौति	बाल् + ओ + रौति	बालोरौति
वुधस् + लिखति	वुध् + ओ + लिखति	वुधोलिखति
मुखस् + मुह्यति	मुख् + ओ + मुह्यति	मुखोह्यति
कस् + णोपदेशः	क् + ओ + णोपदेश	कोपदेशः
भक्तस् + नमति	भक्त् + ओ + नमति	भक्तो नमति
पर्वतस् + धौतः	पर्वत् + ओ + धौतः	पर्वतो धौतः
अगद्स् + ज्वरघ्नः	अगद् + ओ + ज्वरघ्नः	अगदो ज्वरघ्नः
सूर्यस् + भाति	सूर्य् + ओ + भाति	सूर्यो भाति
कस् + बालः	क् + ओ + बालः	को बालः
नरस् + गच्छति	नर् + ओ + गच्छति	नरो गच्छति
काकस् + डिडये	काक् + ओ + डिडये	काको डिडये
नृपस् + दास्यति	नृप् + ओ + दास्यति	नृपोदास्यति

अभी तक आप ने रू सम्बन्धी र के स्थान में उकार किया। अब आप रू सम्बन्धी र् के स्थान में यकार करेंगे। यह अगले सूत्र में बताया जायेगा।

य आदेश विधायक विधि सूत्र

108. भोभगो अघो अपूर्वस्य योऽशि 8 । 3 । 17 ।। एतत्पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि । देवा इह, देवायिह । भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ताः निपाताः । तेषां रोर्यत्वे कृते —

<u>अर्थ</u> :– अश् प्रत्याहार के परे होने पर भो भगो अघो तथा अवर्ण पूर्व वाले रु के स्थान पर यकार आदेश होता है। देवास् + इह यहां पर ससजुषो रूः सूत्र द्वारा पदान्त सकार के स्थान में रू आदेश होकर देवारू + इह बना। उसके बाद उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर देवार् + इह बना। अब यहाँ सूत्र लगा – भो–भगोऽघोऽपूर्वस्य योऽशि। यह सूत्र कहता है कि अश् प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द) का वर्ण पर में हो तो, भो–भगो अघो तथा अवर्ण पूर्व वाले रु के स्थान पर यकार आदेश होता है। यहाँ पर अश् प्रत्याहार का वर्ण पर में है देवार् + इह में इकार तथा पूर्व में अवर्ण है देवार् में वा में आकार उससे परे र है, उस र् के स्थान

में यकार आदेश होकर देवा+य्+ इह बना। उसके बाद लोपः शाकल्यस्य सूत्र से यकार को विकल्प से लोप होकर देवा इह बना और जिस पक्ष में यकार का लोप नहीं होगा उस पक्ष में देवाय् इह में वर्ण सम्मेलन होकर देवायिह प्रयोग सिद्ध हुआ। इस प्रकार देवा इह देवयिह दो रूप सिद्ध हुए। ध्यान रहे कि लोप पक्ष में अर्थात् देवा इह, जिस पक्ष में लोपः शाकल्यस्य से लोप होगा उस पक्ष में आद् गुणः सूत्र द्वारा गुण नहीं होता है। यह अवर्ण पूर्व का उदाहरण इस सूत्र में दिया गया है।

भो भगोऽघोपूर्वस्य योऽशि इस सूत्र से भो भोस् भगोस् अघो– अपूर्वस्य इन जगहों पर सकार को रूत्व होकर इसी सूत्र से यकारादेश होने पर उसका हलि सर्वेषाम् सूत्र से लोप होकर भो भगो, भगो + अघो, अघो अपूर्वस्य बना। उनमें प्रथम दो रूपों को छोड़कर शेष दो प्रयोगों में एचोऽयवायावः सूत्र से अव् आदेश प्राप्त होता है। किन्तु पूर्वत्रासिद्धम् से त्रिपादी हलि् सर्वेषाम् को असिद्ध कर दिये जाने के कारण यकार का लोप एचोऽयवायावः की दृष्टि में असिद्ध हुआ। अर्थात् उसके बीच में यकार ही दिखा। फलतः अव आदेश नहीं हुआ। भो भगोऽघोऽपूर्वस्य ही रह गया।

भोस् भगोस् तथा अघोस् ये सान्त निपात है। ये सब सम्बोधन (सर्व साधारण के सम्बोधन में भोस् भगवान के सम्बोधन में भगोस् तथा पापी के सम्बोधन में अघोष का प्रायः प्रयोग देखा जाता है।) में प्रयोग होते है। भो पूर्वक उदाहरण भोस् + देवा यहाँ पर सबसे पहले सूत्र लगा – ससजुषो रूः इस सूत्र के द्वारा सकार के स्थान में रू आदेश होकर भोरू : देवा बना। उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सत्र से रू में उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर भोर् + देवा बना। उसके बाद सूत्र लगा– भो–भगो–अघो–अपूर्वस्य। यह सूत्र कहता है कि अश् प्रत्याहार के परे होने पर भो, भगो, अघो तथा अपूर्वक रू के स्थान में यकार आदेश होता है। भोर + देवा यहाँ पर अश् प्रत्याहार का वर्ण परे है देवा में द् उससे पूर्व भोर् है उस र से पूर्व भो शब्द है इसलिए रू सम्बन्धी र् के स्थान में य होकर भोय् + देवा बना। अब इसके बाद अगला सूत्र प्रवृत्त हुआ –

वलोप विधायक विधि सूत्र

109 हलि सर्वेषाम् 8 । 3 । 22 ।। भोभगोअघो। अपूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्धलि। भो देवाः ।भगो नमस्ते । अघो याहि।

<u>अर्थ</u> :– हल् परे होने पर भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्वक यकार का लोप होता है।

भोय् + देवा यहाँ पर सूत्र लगा– हलि सर्वेषाम् यह सूत्र कहता है कि हल् परे रहने पर भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्वक यकार का लोप होता है यह उदाहरण भो पूर्वक अर्थात् भो पूर्व में हो ऐसे रू सम्बन्धी र् के स्थान में यकार हुआ है। उस यकार का लोप होता है। उस यकार के बाद हल् प्रत्याहार का वर्ण है देवा में द्। इसलिए यकार का लोप होकर भो देवा ऐसा प्रयोग सिद्ध होता है।

भगोपूर्वक उदाहरण :–

भगोस् + नमस्ते । यहाँ पर ससजुषोरुः इस सूत्र से सकार के स्थान में रु होकर अघोरु + याहि बना। उसके बाद रु में उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् – सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर अघोर् + याहि बना। उसके बाद भो भगो–अघोअपूर्वस्य योऽशि सूत्र से रु सम्बन्धी र् के स्थान में यकार होकर भगोय + नमस्ते बना। उसके बाद हलि सर्वेषाम् सूत्र से यकार का लोप होकर भगो नमस्ते प्रयोग सिद्ध होता है। इसी प्रकार अघो याहि बनेगा।

विग्रह	आदेश	लोप	सन्धि
देवास् + इह	देवाय + इह	देवा + इह	देवा इह
भोस् + देवा	भोय् + देवा	भो + देवा	भो देवा
भगोस् + नमस्ते	भगोय् + नमस्ते	भगो + नमस्ते	भगो नमस्ते
अधोस् + याहि	अधोय् + याहि	अधो + याहि	अधो याहि
मृगस् + एति	मृगय् + एति	मृग + एति	मृग एति
बालास् + इच्छन्ति	बालाय् + इच्छन्ति	बाला + इच्छन्ति	बाला इच्छन्ति
भोस् + देवस्त	भोय् + देवस्त	भो + देवस्त	भो देवस्त
रामस् + अब्रवीत	रामय् + अब्रवीत	राम + अब्रवीत	राम अब्रवीत
रविस् + उदेति	रविय् + उदेति	रवि + उदेति	रवि उदेति
भोस् + परमात्मन	भोय् + परमात्मन	भो + परमात्मन	भो परमात्मन
तन्नस् + आसुव	तन्नय् + आसुव	तन्न + आासुंव	तन्न आसुव

अभी तक आपने विसर्ग सन्धि में यलोप सन्धि का उदाहरण पढ़ा। अब इसके बाद रेफादेश सन्धि के विषय में अध्ययन करेंगे।

रेफादेश विधायक विधि सूत्र

110 रोऽसुपि 8 । 2 । 69 ।।अह्नो रेफादेशो न तु सुपि । अहरहः अहर्गणः ।

<u>अर्थ</u> :– अहन् शब्द के अन्त्य नकार के स्थान पर र् आदेश होता है। परन्तु सुप् परे होने पर नही होता है।

<u>अलोऽन्त्यस्य</u> – परिभाषा के बल पर अहन् के अन्त्य वर्ण के स्थान पर रेफ अर्थात् र आदेश होगा किन्तु उस रेफ से परे सुप् विभक्ति नहीं होनी चाहिए। यह सूत्र अहन् के नकार के स्थान पर र आदेश करने वाले अहन् इस सूत्र का बाधक है। अहन् + अहन् में नित्य वीप्सयोः सूत्र से अहन को द्वित्व हुआ है। और सु का स्वमोर्नपुंसकात सूत्र से लुक भी हुआ है। अब इसके बाद रोऽसुपि से दोनों नकारों के स्थान पर र् आदेश होकर अहर + अहर बना। प्रथम र् के स्थान द्वितीय अहर का अकार मिलकर अहरहर बना। अब द्वितीय रेफ अर्थात् र् को अवसान संज्ञा होने के कारण खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से र् के स्थान पर विसर्ग होकर अहरहः प्रयोग सिद्ध होता है।

<u>अहर्गणः</u> अहन् + गणः में रोऽसुपि इस सूत्र से नकार के स्थान पर र होकर अहर् + गणः बना। रेफ का उर्ध्वगमन होकर अहर्गणः प्रयोग सिद्ध होता है। यहां पर अवसान भी नहीं है। और खर् प्रत्याहार भी पर में नहीं है इसलिए रेफ को विसर्ग नहीं हुआ। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी समझें।

रेफलोप विधायक सूत्र

111. रो रि 8 । 2 । 14 ।। रेफस्य रेफे परे लोपः ।

<u>अर्थ</u> :– रेफ के परे होने पर रकार का लोप होता है। अर्थात् दो रेफ एक साथ हीं नहीं मिलेगें क्योंकिं व दूसरे रेफ के परे होने पर प्रथम रेफ का इस सूत्र से लोप होता है। इस सूत्र का उपयोग आगे सूत्र में दिया जा रहा है।

दीर्घ विधायक विधि सूत्र

112.ढ्रलोपेपूर्वस्य दीर्घोऽणः 6 । 3 । 111 । ढरेफयोर्लोपनिभित्तयोः पूर्वस्याणो दीर्घः । पुनारमते।

हरी रम्यः । शम्भू राजते। अणः किम् ? तृढः। वृढः ।।

अर्थ :– ढकार और रेफ अर्थात् र के लोप होने में निमित्त भूत वर्ण रेफ और ढकार के परे होने पर पूर्व अण् को दीर्घ होता है।

व्याकरण शास्त्र में दूसरे ढकार के परे होने पर पूर्व ढकार का ढोढे लोपः सूत्र लोप हो जाता है और दूसरे रकार के परे होने पर पूर्व वाले रेफ का रोरि सूत्र के द्वारा लोप हो जाता है। इस तरह ढकार और रेफ के लोप होने में निमित्त बने रेफ और ढकार ही है। उनके परे होने पर पूर्व में विद्यमान अण् अर्थात् अ, इ, उ, को दीर्घ होता है। उदाहरण यथा पुनर + रमते यहां पर रोर सूत्र के द्वारा रमते का र रेफ परे होने के कारण पूर्व रेफ अर्थात् पुनर के रकार का लोप होकर पुन + रमते बना। अब सूत्र लगा – ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः। यह सूत्र कहता है कि ढकार और रेफ के लोप होने के निमित्त भूत वर्ण र और ढ के परे होने पर पूर्व अण् को दीर्घ होता है। यहां पर एक रेफ के लोप में दूसरा रेफ निमित्त बना। यदि दूसरा रेफ न होता तो प्रथम रेफ के लोप की प्राप्ति ही नहीं होती। अतः दूसरा रेफ लोप का निमित्त है लोप होने पर रमते बना। द्वितीय रेफ के परे होने पर पूर्व में विद्यमान अण् पुनः के नकार में अकार को दीर्घ पुना रमते प्रयोग सिद्ध होता है।

हरी रम्यः हरिस् + रम्यः यहां पर ससजुषोरूः सूत्र से स् के स्थान पर रूत्व होकर हरिरू + रम्यः बना। उसके बाद उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से रू में उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर हरिर् + रम्यः बना। उसके बाद रोरि सूत्र से रकार परे होने के कारण प्रथम रेफ का लोप होकर हरि + रम्यः बना। उसके बाद सूत्र लगा–ढ्रलोपेपूर्वस्य दीर्घोऽणः यह सूत्र कहता है कि ढकार और रेफ के लोप होने में निमित्त भूत वर्ण रेफ और ढकार के परे होने पर पूर्व अण् को दीर्घ होता है। द्वितीय रेफ पर में है रमते का रकार, उससे पूर्व रेफ का लोप होकर हरि रम्यः बना। उस र् से पूर्व अण् प्रत्याहार का वर्ण है हरि में रि में इ। उस इ को दीर्घ होकर हरी रम्यः प्रयोग सिद्ध होता है।

शम्भू राजते : शम्भुस् + राजते सकार के स्थान पर ससजुषोरूः सूत्र से रूत्व होकर शम्भुरू + राजते बना। उसके बाद उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर शम्भुर् + राजते बना। उसके बाद रोरि सूत्र से रेफ के परे होने पर प्रथम र् का लोप होकर शम्भु + राजते बना। उसके बाद द्वितीय रेफ के परे होने पर पूर्व में विद्यमान अण् शम्भु के उकार को ढ्रलोपेपूर्वस्य दीर्घोऽणः सूत्र से दीर्घ होने पर शम्भू + राजते प्रयोग सिद्ध होता है। अण् प्रत्याहार अ इ उ ये तीन वर्ण आते है इन तीनों वर्णो का उदाहरण आपने पढ़ लिया।

अण्ः किम् ? तृढः । वृढः। अब प्रश्न करते है कि ढ्रलोपेपूर्वस्य दीर्घोऽण्ः इस सूत्र में अणः पढ़ने की क्या आवश्यकता थी? ढकार और रेफ के लोप में निमित्त भूत ढकार और रेफ के परे होने पर पूर्व अण् को दीर्घ हो, इतने मात्र कहने से पुनारमते, हरी रम्यः तथा शम्भू राजते आदि प्रयोग सिद्ध हो जाते।

उत्तर दिया कि यदि अणः न कहते हो तो तृढ़ः वृढः इन प्रयोगों में दोषा अर्थात् दीर्घ होने लगता। क्योंकि जब अण् नहीं पढ़ा जायेगा तो सूत्र अण् हो या अण् से भिन्न कोई भी अच् प्रत्याहार का वर्ण हो तो उसको दीर्घ होने लगेगा। फलतः तृह् वृह उद्यमने धातु से क्त प्रत्यय होकर तृह + क्त, वृहः क्त बना। उसके बाद लशक्वतद्धिते सूत्र से क्त में पूर्व क् की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर त मात्र बचता है। अतः तृह

+ त्, वृह् + त बना। उसके बाद तकार के स्थान पर धकार होकर तृह + ध , वृह + ध बना। उसके बाद होढः सूत्र से हकार के स्थान पर ढकार होकर तृढ् + ध, वृढ़ + ध बना। उसके बाद धकार को ष्टुना ष्टुः सूत्र से ष्टुत्व होकर तृढ़ + ढ, वृढ़ + ढ़ बना। उसके बाद ढो ढेलोपः सूत्र से पूर्व ढकार का लोप होकर तृ + ढ, वृ + ढ बना। यहां पर ढकार के लोप होने में निमित्तक ढकार परे है। अतः पूर्व में ऋकार को दीर्घ होने लगता जिसके कारण तृद्ध, वृद्ध ऐसा अनिष्ठ रूप बनने लगता। उस अनिष्ठ दोष के निवारणार्थ यहां पर अणः पर पढ़ा गया है। अतः यहां पर तृढ, वृढ शब्द बना। उसके बाद प्रातिपदिक संज्ञा होकर प्रथमा विभक्ति एक वचन विवक्षा में सु प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोपः सकार रूत्व विसर्ग होकर तृढः वृढः ऐसा प्रयोग सिद्ध होता है।

इसी प्रकार इस सूत्र का अन्य उदाहरण यथा –

विग्रह	आदेश	सन्धि
पुनर् + रम्यः	पुना + रम्यः	पुनारम्यः
पुनर् + रमते	पुना + रमते	पुनारमते
हरिर् + रम्यः	हरी + रम्यः	हरीरम्यः
शम्भूर् + राजते	शम्भू + राजते	शम्भूराजते
नर् + रम्यः	ना + रम्यः	ना रम्यः
अन्तर् + राष्ट्रियः	अन्ता + राष्ट्रिय	अन्ताराष्ट्रियः
सवितुर् + रश्मयः	सवितू + रश्मयः	सवितूरश्मयः
भूपतिर् + रक्षति	भूपती + रक्षति	भूपती रक्षति
निर + रस	नी + रस	नीरस
निर् + रोग	नी + रोग	नी रोग
लिढ् + ढः	ली + ढः	लीढः
गुरूर् + रम्यः	गुरू रम्यः	गुरू रम्यः
लिढ् + ढाम्	ली + ढाम्	लीढाम्
लिढ् + ढे	ली + ढे	लीढे

विशेष :– पुना + रमते में यहाँ पर पुनस् + रमते यह विग्रह अशुद्ध है, क्योंकि पुनर् – यह अव्यय पद है और रकारान्त है, सकारान्त नहीं। सकारान्त होने पर हशि च से उत्व होकर पुनोरमते ऐसा अनिष्ट प्रयोग बनने लगता। हरिस् + रम्यः, शम्भूस् + राजते ये दोनों पद सकारान्त है। अवर्ण पूर्व में न होने से हशि च सूत्र से उत्व नहीं होता है। अतः इसी प्रकार अन्य उदाहरण समझे। अब इसके बाद उत्वसन्धि का कुछ अन्य उदाहरण दिया जा रहा –

मनस् + रथ इत्यत्र रूत्वे कृते हशि च (106)

इत्युत्वे 'रोरि' (111) इति लोपे च प्राप्ते –

अर्थ :– मनस् + रथ यहां पर ससजुषो रूः सूत्र से सकार के स्थान में रु होकर मनरू रथ बना। उसके बाद उपदेशेऽजनुनासिक इत सूत्र से रू में उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर मनर + रथ बना।

शंका :– अब यहाँ पर मनर् + रथ में हशि च सूत्र से उत्व प्राप्त है, तथा रोरि सूत्र से पूर्व रकार को लोप प्राप्त है अतः ये दोनों सूत्र एक साथ प्राप्त होते है। इन दोनों में से पहले कौन सा सूत्र हो? इस शंका के निवृत्ति अर्थात् निवारण के लिए अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है –

परिभाषा सूत्र

113 विप्रतिषेधे परं कार्यम् 1 । 4 । 2 ।।

तुल्य बलविरोधे परं कार्यं स्यात् ।
इति लोपे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति 'रोरि' इत्यस्यासिद्धत्वादुत्वमेव। मनोरथः।

अर्थ :– तुल्य बल वालों का विरोध होने पर, पर कार्य होता है पाणिनि ने सबसे पहले अष्टाध्यायी का निर्माण किया। उसमें आठ अध्याय है। उन आठ अध्यायों के प्रति अध्यायों में चार पाद का निर्माण किया, तथा उन प्रति पादों में सूत्र संख्या का निर्माण किया गया। कहने का तात्पर्य यह है कि प्राचीन् व्याकरण में अध्याय पाद संख्या के क्रम से अध्ययन करते है और उन सूत्रों के अनुसार प्रयोग का निर्माण किया है– जैसे प्राचीन व्याकरण का ग्रन्थ है काशिकावृत्ति। किन्तु लघुसिद्धान्त कौमुदी जो ग्रन्थ है वह नव्य व्याकरण का है जिसमें वरदराजाचार्य ने प्रयोगों के अनुसार सूत्रों का निर्माण किया। किन्तु जब हम किसी प्रयोग को सिद्ध करते है यदि वहां पर एक ही साथ दो सूत्र जब प्राप्त होते है, तो, अध्याय पाद सूत्र संख्या के अनुसार पूर्वा पर का ज्ञान करते है और उसी से निर्णय भी करते है। इसका उदाहरण आगे दे रहे है –

तुल्य बल वाले दो कार्यो के विरोध को विप्रतिषेध कहते है। पृथक् – पृथक् स्थानों पर चरितार्थ होने वाले सूत्र तुल्यबल वाले कहलाते है। इन तुल्य बल वालों का यदि विरोध हो जाये तो इनमें जो अष्टाध्यायी में पर अर्थात् बाद वाला कहा गया है वही प्रवृत्त होता है यथा हशि च सूत्र 'शिवो वन्द्यः आदि स्थानों पर चरितार्थ हो चुका है इन स्थानों पर रोरि सूत्र प्रवृत्त नहीं हो सकता और रोरि सूत्र हरीरम्यः आदि स्थानों पर चरितार्थ हो चुका है। इन स्थानों पर हशि च सूत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती। तो इस प्रकार हशिच और रोरि तुल्य बल वाले है। अब इन तुल्यबल वालों का मनर् + रथ में विरोध उत्पन्न हो गया है। तो वही कार्य होंगे जो अष्टाध्यायी में पढ़ा गया है।

अष्टाध्यायी में हशिच सूत्र ।6 ।1 ।110 । अर्थात् छठे अध्याय का प्रथम पाद का एक सौ दशवा सूत्र है और रोरि (8. 3. 14) अर्थात् आठवे अध्याय का तीसरे पाद का चौदहवाँ सूत्र है। इस प्रकार पूर्व सूत्र है हशि च तथा पर सूत्र है रोरि। अतः रोरि सूत्र से रेफ अर्थात् र् का लोप प्राप्त होता है किन्तु पूर्व सूत्र और पर सूत्र में दोनों में कौन बलवान है उसको निर्णय करने के लिए पूर्वत्रासिद्धम् (31) सूत्र उपस्थित होता है और कहता है कि सपादसप्ताध्यायी की दृष्टि में त्रिपादी सूत्र असिद्ध हो तो अर्थात् सिद्ध नहीं होते है। परन्तु रोरि सूत्र त्रिपादीस्थ होने के कारण हशि च की दृष्टि में असिद्ध है। सूत्र संख्या 31 पूर्वत्रासिद्धम् को देखे) अतः हशि च की दृष्टि में रोरि सूत्र का अस्तित्व ही नहीं है। इसलिए हशि च सूत्र से र के स्थान में उ होकर मन + उ + रथः बना। उसके बाद आद्गुणः सूत्र से अ + उ = ओ गुण् होकर मन् + ओ +रथः बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर मनोरथः प्रयोग सिद्ध होता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देखे –

विग्रह	**आदेश**	**सन्धि**
मनर् + रथः	मन् + उ + रथ	मनोरथः
बालार् + रोदति	बाल् + उ + रोदति	बालोरोदति
रामर् + राज	राम + उ + राज	रामोराज
देवर् + राक्षसः	देव + उ + राक्षसः	देवोराक्षसः
राधवर् + रामः	राधव + उ + राम	राधवो रामः
काकर् + रौति	काक + उ + रौति	काकोरौति
भूयर् + रमते	भूय + उ + रमते	भूयोरमते

ईश्वर् + रमते	ईश्वर + उ + रमते	ईश्वरोरमते
कृष्णर् + रक्षति	कृष्ण + उ + रक्षति	कृष्णो रक्षति
धर्मर् + रक्षति	धर्म + उ + रक्षिति	धर्मो रक्षति
देवर् + राजते	देव + उ + राजते	देवो राजते

अभी तक आपने स् को रूत्व किया। अब उसका लोप करने का विधान किया जा रहा है। इसके लिए अगला सूत्र प्रवृत्त हो रहा है –

सुलोप विधायक विधि सूत्र

114 एतत्तदोः सुलोपोऽकोरञ्समासे हलि 6 । 1 । 132।।

अककारयो रेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि न तु नञ् समासे। एष विष्णुः । स शम्भु : । अकोः किम् ? एषको रूद्रः अनञ् समासे किम् ? असः शिवः । हलि किम् ? एषोऽत्र।

अर्थ :– हल् वर्ण के परे रहने पर एतद् और तद् शब्द के बाद आने वाले सु प्रत्यय का लोप हो जाता है किन्तु उन शब्दों में अकच् प्रत्यय न हुआ हो तो।
अकच् प्रत्यय करने वाला सूत्र है – अव्यय सर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः । इस सूत्र से एतद और तद् शब्दों में अकच् प्रत्यय होता है। एतद् और तद् शब्दों के बिना अकच् का रूप एष कृष्णः, स श्यामः है और एतद् और तद् शब्दों के अकच् प्रत्यय वाला रूप एषकः कृष्णः सकः श्यामः है। सु का लोप हल् प्रत्याहार के परे रहने पर ही होता है। जैसे कृष्ण का ककार हल् वर्ण परे है, और स श्याम में श्याम शकार हल् वर्ण परे है। यदि एतद और तद् शब्दों में नञ् समास हुआ हो तो स का लोप नहीं होगा। जेसे – न सः = असः, इसी प्रकार एतद् और तद् शब्दों अकच् प्रत्यय न हुआ हो और नञ समास न हुआ और हल् वर्ण परे हो तो एतद् और तद् के सु का लोप हो जाता है। एष + सु + विष्णुः इसमें सु यह प्रथमा विभक्ति के एक वचव वाला प्रत्यय है। सु में उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर एषस् + विष्णुः बना। यहाँ पर एष जो शब्द है वह एतद् शब्द का यहां नञ् समास भी नहीं है न अकच् प्रत्यय भी है और स् के बाद हल् वर्ण परे है विष्णुः का वकार इसलिए इस सूत्र से स का लोप होकर एष विष्णुः प्रयोग सिद्ध होता है।

स शम्भुः सस् + शम्भूः यहाँ पर न अकच प्रत्यय है न नञ् समास है और सु के सकार के बाद शम्भू का शकार हल् वर्ण परे है। इसीलिए स का लोप होकर स शम्भुः प्रयोग सिद्ध होता है। अकोः किम् ? एषको रूद्रः । सूत्र में यदि अकोः अर्थात् अकच् प्रत्यय के ककार से रहित एतद् और तद् शब्द ऐसा अर्थ न करते तो एषको रूद्र में एषकस् सु का लोप हो जाता और एषक रूद्रः ऐसाअनिष्ट रूप बनने लगता। इसलिए इस सूत्र से स् का लोप न होकर ससजुषोरूः सूत्र से स् को रू होकर एषकरू + रूद्र बना। उकार की इत्संज्ञा तथा लोप होने के बाद एषक र् + रूद्रः बना। उसके बाद हशि च सूत्र से र को उत्व होकर एषक् + उ + रूद्रः बना। आद् गुण से गुण होकर एषको रूद्रः प्रयोग सिद्ध होता है।

अनञ् समासे किम् ? असः शिव : । सूत्र में यदि अनञ् समास न कहते तो अस् + स् + शिवः में दोष आ जाता क्योंकि तब सूत्र नञ् समास में भी लगता और अनञ् समास में भी लगता है। असः यहां पर नञ् समास है यहाँ पर भी सु का लोप होकर अस शिवः ऐसा अनिष्ट रूप बनने लगता है। इसलिए यहाँ पर नञ् समास होने के कारण सु को लोप न होकर सकार को रूत्व विसर्ग होकर असः शिवः ऐसा प्रयोग सिद्ध होता है।

हलि किम् ? एषोऽत्र । सूत्र में यदि हल् न कहते तो अच् परे होने पर भी स् का लोप हो जाता और एष अत्र तथा सवर्ण दीर्घ होकर एषात्र ऐसा अनिष्ट रूप बनने लगता। इसलिए हल् वर्ण परे न होने के कारण एष + स् + अत्र यहाँ पर एतत्तदोः सुलोपोऽ को रनञ् समासे हलि इस सूत्र से स का लोप न होकर एषस् + अत्र यही रहा। उसके बाद ससजुषोरूः सूत्र से सकार को रूत्व होकर एष रू + अत्र बना। उकार की इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर एष् + र् + अत्र बना। यहाँ पर अतोरोरप्लुतादप्लुते सूत्र से र को उकार होकर एष + उ + अत्र बना। उसके बाद आद् गुणः सूत्र से अ + उ = ओ गुण होकर एष् + ओ + अत्र बना। उसके बाद वर्ण सम्मेलन होकर एषो + अत्र बना। उसके बाद एङः पदान्तादति सूत्र से पूर्व रूप होकर एषोऽत्र प्रयोग सिद्ध होता है। इसी प्रकार इस सूत्र का अन्य उदाहरण देखे –

विग्रह	**लोप आदेश**	**सन्धि**
एषस् + विष्णुः	एष + विः	एष विष्णुः
सस् + शिवः	स + शिवः	स शिवः
सस् + हशति	स + हशति	स हशति
एषस् + हसति	एष. हसति	एष हसति
सस् + रमते	स + रमते	स रमते
एषस् + रमते	एष + रमते	एष रमते
सस् + नमति	स + नमति	स नमति
एषस् + नमति	एष + नमति	उष नमति
सस् + घोषः	स + घोषः	स घोषः
एषस् + छादयति	एष + छादयति	एष छादयति
सस् + पठति	स + पठति	स पठति
एषस् + पठति	एष + पठति	एष पठति
सस् + लुनाति	स + लुनाति	स लुनाहि
सस् + ददाति	स + ददाति	स ददाति
एषस् + लुनाति	एष + लुनाति	एष लुनाहि
एषस् + ददाति	एष + ददाति	एष ददाति
सस् + चलति	स + चलति	स चलति
एषस् + करोति	एष + करोति	एष करोति
सस् + शेते	स + शेते	स + शेते
एषस् + शेते	एष + शेते	एष शेते
सस् + सर्पति	स + सर्पति	स सर्पति
एषस् + सर्पति	एष + सर्पति	एष सर्पति
सस् + धावति	स + धावति	स धावति
एषस् + धावति	एष + धावति	एष धावति
सस् + गच्छति	स + गच्छति	स गच्छति
एषस् + गच्छति	एष + गच्छति	एष गच्छति

सुलोप विधायक विधि सूत्र

115. सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् 3 । 1 । 134 ।।

स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि पादश्चेल्लोपे सत्येव पूर्येत।

सेमामविड्ढि प्रभूतिम् । सैष दाशरथी रामः ।

अर्थ :– यदि केवल लोप होने से ही पाद पुरा होता हो तो अच् प्रत्याहार के परे होने पर तद् शब्द के सु का लोप होता है। श्लोक आदि के एक विशेष भाग के छन्दः शास्त्र में पाद कहते है। उसी का यहाँ ग्रहण समझना चाहिए। उदाहरण यथा –

सेमाविड्ढि प्रभूतिम् (ऋग्वेद 2. 249) यह ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के चौबीसवें सूक्त का प्रथम मन्त्र है। यहां वैदिक जगती छन्द है। वैदिक छन्द के प्रत्येक पाद में बारह अक्षर होते है। सेमामविड्ढ़ि प्रभूति य ईशिषे यह जगती छन्द का एक पाद है। इस में सस् + इमाम् में सु वाले सकार का लोप होकर स इमाम् अर्थात् बारह अक्षर वाला बनता है। यदि लोप नहीं हुआ होता तो स् को रूत्व अर्थात् उ 'डकोय,य को लोप करने पर स इमामविडढि बनता है त्रिपादी होने के कारण यकार का लोप असिद्ध होगा तो स इमाविड्ढि प्रभूति य इशिषे ऐसा बनेगा। अब पाद में बारह अक्षर होने चाहिए थे, तेरह अक्षर हो गये। इस तरह से छन्दों भंग हुआ। यदि सोऽचि लोपेचेत्पादपूरणम् से सकार का लोप करते है तो स + इमा में गुण हो जायेगा, क्योंकि यह सूत्र सपादसप्ताध्यायी का है। इसके द्वारा सु का लोप होकर पर आद्गुणः की दृष्टि में असिद्ध नहीं होगा। स + इ में दो अक्षरों से एक ही अक्षर (आद्गुणः से गुण होकर) 'से' बनेगा। जिससे पाद में बाहर अक्षर ही रह जायेंगे। इसी तरह पाद की पूर्ति होकर छन्दः ठीक से बैठेगा। अतः सु का लोप इस सूत्र में से हो जाता है, फलतः सेमामविड्ढि प्रभूतिं य इशिषे सिद्ध हो जाता है। यह वैदिक मन्त्र का उदाहरण है। लौकिक मन्त्र का उदाहरण आगे देखिये '–

सैष दाशरथी रामः यह अनुष्टुप–छन्द का एक चरण अर्थात् पाद है। इस छन्द के प्रत्येक पाद में आठ अक्षर होते है। सस् + एष दशरथी रामः में सु वाले स् का लोप होने पर आठ अक्षर बनते है और यदि लोप नहीं हुआ तो सकार को रूत्व यत्व करके यकार का लोप करके स + एष दशरथी रामः बनता है। त्रिपादी होने के कारण यकार का लोप असिद्ध होगा तो सः एष में वृद्धि रेचि च सूत्र से वृद्धि भी नहीं हो सकेगी। अतः स एष दाशरथी रामः ऐसा बनेगा। अब पाद में आठ अक्षर होने चाहिए थे, किन्तु नव अक्षर हो गये। यह छन्दोभंग हो गया। यदि इस सूत्र से सकार का लोप करते है तो एष में वृद्धि हो जायेगी, क्योंकि यह सूत्र सपादसप्ताध्यायी का है। सोऽचि लोपे चेत्पादपुरणम् सूत्र के द्वारा सू का लोप होने पर वृद्धिरेचि के दृष्टि में असिद्ध नहीं होगा। स + एष यहां पर स में अ + एष में ए अर्थात् अ + ए इन दोनों वर्णो के स्थान पर वृद्धि ऐ होकर स् ऐ + ष = सैष बनेगा। जिससे पाद में आठ ही अक्षर रह जायेंगे। पाद की पूर्ति होगी अर्थात् छन्दोभंग नहीं होगा। अतः सु का लोप इस सूत्र से हो जाता है। फलतः सैष दाशरथी रामः प्रयोग सिद्ध हो जाता है।
सैष दशरथी रामः, यह लौकिक श्लोक का उदाहरण है। इससे सम्बन्धित एक श्लोक प्रसिद्ध है। जिसमें चारों पादों में इस सूत्र के उदाहरण मिलते है –

सैष दाशरथी रामः, सैष राजा युधिष्ठिरः ।
सैष कर्णो महादानी, सैष भीमो महाबलः ।।

अर्थ – ये वे भगवान दशरथ पुत्र श्रीराम है, ये वे राजा युधिष्ठिर है, ये वे महादानी कर्ण है और ये वे महाबली भीम है।
जहाँ लोप करके नहीं अपितु अन्य किसी कारण से पाद पूर्ति हो जाती है वहां पर सोऽचि लोपेचेत्पादपुरणम् सूत्र से सु का लोप नहीं होता है। जैसे – सोऽहमाजन्मशुद्धानाम् भी अनुष्टुप–छन्द का चरण है। यहाँ पर सु का लोप करते है तो

स अह् का अ तथा स का अ अर्थात् अ + अ = आ, सोहमाजन्मशुद्धानाम वन जाता है। ऐसा बनने पर छन्दोभंग तो नहीं हो रहा है किन्तु सोऽचि लोपे चेत्पादपुरणम् से सु का लोप न करने पर भी स को रूत्व करके अतोरोरप्लुताप्लुते सूत्र से उत्व होकर स + उ बना। तथा अ + उ मिलकर ओ गुण हो जाता है। स् + ओ बना। स् में ओ मिलकर सो अहम बना। उसके बाद एङः पदान्तादति से पूर्वरूप एकादेश होकर पादपूर्ति होती है, सोऽहमाजन्मशुद्धानाम् बनता है, एक चरण में आठ अक्षर होने चाहिए, आठ ही अक्षर बनते है और छन्दोभंग भी नहीं होता है। अतः अन्य कारणों से पदापूर्ति हो रही है इसलिए सोऽचिलोपे चेत्पादपुरणम् से सु का लोप नहीं होता।

अभ्यास प्रश्न 1

अतिलघु –उत्तरीय प्रश्न

1. सकार आदेश विधायक सूत्र कौन है ?
2. रूत्व विधायक सूत्र कौन है?
3. रू सम्बन्धि र् के स्थान पर उत्व करता है?
4. उत्व विधायक विधि सूत्र कौन सा है?
5. यादेश विधायक सूत्र कौन है?
6. अहन् के नकार के स्थान किस सूत्र से रेफ आदेश होता है?
7. पुनारमते किस सूत्र का उदाहरण है?
8. हल् वर्ण के परे होने पर एतद् और तद् शब्द के सु को क्या होता है?

अभ्यास प्रश्न 2

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. खर प्रत्याहार पर में हो तो विसर्ग के स्थान पर होता है :–
   (क) क् (ख) ह् (ग) स् (घ) न्
2. प्लुत भिन्न ह्रस्व अकार से परे रू सम्बन्धी रेफ होता है :–
   (क) अकार (ख) उकार (ग) इकार (घ) लृकार
3. ह्रस्व अकार से परे रू सम्बन्धि र् के स्थान पर होता है :–
   (क) अकार (ख) उकार (ग) एकार (घ) औकार
4. हलिसर्वेषाम् सूत्र का उदाहरण है :–
   (क) भो देवा (ख) रामःशेते (ग) देवा इह (घ) देवायिह
5. रेफ के परे होने पर रेफ का लोप होता है ‘–
   (क) रोऽसुपि (ख) हलिसर्वेषाम् (ग) रोरि (घ) आद्गुण
6. यदि लोप होने पर पाद की पूर्ति हो जाये तो सु का होता है :–
   (क) लोप (ख) विसर्ग (ग) रूत्व (घ) यत्व

4.4 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान चुके है कि विसर्ग सन्धि किसे कहते है विसर्ग सन्धि का चिन्ह क्या होता है। इन सबका वर्णन मुख्य रूप से इस इकाई में की गयी है। विसर्ग सन्धि में प्रायः विसर्गो की ही सन्धियाँ की गयी है। जिस प्रकार विष्णुः + त्राता है यहां पर विसर्ग के स्थान पर विसर्जनीयस्य सः इस सूत्र से सकार होकर विष्णुस् + त्राता बना। वर्ण सम्मेलन होकर विष्णुस्त्राता प्रयोग सिद्ध होता है। ऐसे ही प्रायः इस सन्धि में प्रयोग देखे जाते है

4.5 शब्दावली

शब्द	अर्थ
विष्णुस्त्राता	विष्णु का रक्षक है
हरिः शेते	भगवान हरि शयन करते है
शिवोऽर्च्यः	शिव पूजनीय है
शिवो वन्द्यः	शिव वन्दनीय है
देवा इह	हे देवो यहां (आइये)
भो देवा	हे देवताओ
भगो नमस्ते	भगवान आप को नमस्कार है
अद्यो याहि	हे पापी चले जाओ
अहरः	प्रतिदिन
अहर्गणः	दिनों का समूह
पुना रमते	पुनः रमण करता है
हरी रम्यः	हरि सुन्दर है।
शम्भूराजते	शिव जी शोभित होते है
मनोरथः	मन की इच्छा अभिलाषा
एष विष्णुः	ये विष्णु है।
स शम्भूः	वे शम्भू है।
सैषदाशरथी रामः	ये वे भगवान दशरथ पुत्र श्री राम है।

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1– 1– विसर्जनीयस्य सः 2– स–सजुषोरूः 3– अतोत्र रोप्लुतादप्लुते 4– हशि च 5– भोभगो अद्योअपूर्वस्य योऽशि 6– रोऽसुपि 7– द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोडणः 8– लोप

अभ्यास प्रश्न 2– 1– (ग) 2– (ख) 3– (ख) 4– (क) 5– (ग) 6–(क)

4. 7 सदर्भ ग्रन्थ सूची

1–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
लघुसिद्धान्त कौमुदी	वरदराजाचार्य	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी
2–वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी .	भट्टोजिदीक्षित	शारदा निकेतन वी, कस्तुरवानगर सिगरा वाराणसी
3– महाभाष्यम्	पतंजलि	चौखम्भा संस्कृत भारती वाराणसी

4. 8 उपयोगी पुस्तकें

1–ग्रन्थ नाम	लेखक	प्रकाशक
लघुसिद्धान्त कौमुदी	वरदराजाचार्य	चौखम्भा संस्कृत

4.9. निबन्धात्मक प्रश्न

1. सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए?